'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2013-15
WPP Licence No.- U(C)-101/2013-15
R.N.I. No. 68180/98

प्रकाशन तिथि– 30 नवंबर, 2013

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन – जस्टिस पब्लिकेशंस, टी–22, अतुल ग्रोव रोड, क्नॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001, फोन : 23354841–42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 16 ● अंक 25 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● 16 से 30 नवंबर, 2013

सभी बुरे कार्य मन के कारण उत्पन्न होते हैं। अगर मन परिवर्तित हो जाये तो क्या अनैतिक कार्य रह सकते हैं?

—गौतम बुद्ध

क्या हमारा भी अस्तित्व है?

डॉ. उदित राज

समाज इतना सो रहा है कि वह यह भी महसूस नहीं कर पा रहा कि उसका भी कोई अस्तित्व है। दलित–आदिवासी समाज का अस्तित्व का एहसास कराने वाले कर्मचारी, राजनीतिज्ञ और बुद्धिजीवी के अलावा और कौन है? दूसरे समाज या देश में ऐसा होता तो विद्रोह खड़ा हो जाता। इतने बड़े समाज की देश के पैमाने पर कोई चर्चा नहीं है। दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में चुनाव हो रहे हैं, क्या हमारी समस्या या मांग पर किसी दल ने वोट मांगा? चुनाव में निजी क्षेत्र में आरक्षण को देने की बात किसी ने नहीं कही। आरक्षण कानून बनने के लिए विधेयक 2004 से संसद में लंबित है जो अभी तक यह पास नहीं हो सका है। पदोन्नति में आरक्षण का मामला भी संसद में लटका है। सफाई काम में ठेकेदारी प्रथा का वर्चस्व हो ही गया है।

जब भी टेलीविजन की खबर देखें तो बात मूल रूप से सांप्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता की होती रहती है। शेष खबरें सनसनी पैदा करने वाली होती है। इस मीडिया में हमारी बात होती ही नहीं। हम इतने सोये हुए हैं कि यह भी नहीं सोच पाते कि इस टेलीविजन और समाचार पत्रों में हमारी खबरें तो होती नहीं है, ऐसा क्यों? हम किसके बारे में खबर सुनते हैं? क्या उसमें हम होते हैं? क्या हमारी चर्चा होती है? क्या वे खबरें सच होती है? कितने लोगों ने इस मीडिया का बहिष्कार के बारे में सोचा होगा? हममें से कितने लोग हैं जिन्होंने वैकल्पिक मीडिया अर्थात् सोशल मीडिया पैदा करने की कोशिश भी की हो। अस्तित्वहीन में जाने में केवल मनुवादियों की ही भूमिका नहीं है बल्कि हमारी शिथिलता और निकम्मापन भी है। एक मशहूर शायर ने कहा था ''जिस खेत का अन्न मयस्सर न हो तो उसे जला दो''। हो सकता है कि इस शेर का असर औरों पर पड़ता हो लेकिन दलित–आदिवासी समाज पर नहीं पड़ता वर्ना वे अपने अस्तित्व के लिए उठ खड़े होते। इतिहास बार–बार अधिकार मांगने के लिए मौका भी नहीं देता। जिस तरह से हालात चल रहे हैं अब बहुत दिन नहीं बचे हैं जब हम चाहकर भी कुछ न कर सकें। 16 दिसंबर की रैली जंतर–मंतर, नई दिल्ली पर हो रही है, इसे एक अधिकार एवं सम्मान पाने का अवसर ही समझें और पूरी ताकत से रैली को सफल बनायें।

ब्रिटेन में जातिगत भेदभाव पर प्रतिबंध लगना बाकी

लंदन : गत् 17 अक्टूबर को इंग्लैंड के दलित संगठनों ने हाईड पार्क में प्रदर्शन कर सरकार से यह मांग की कि वह 'इक्वालिटी एक्ट' (समानता अधिनियम) के तहत जातिगत भेदभाव को अपराध घोषित करने के लिए तुरंत कदम उठाए। एक वक्तव्य में इन संगठनों ने कहा 'पुरातन व अप्रासंगिक प्रथाओं और परंपराओं के आधार पर आधुनिक ब्रिटेन में एक समुदाय द्वारा दूसरे समुदाय के साथ भेदभाव अस्वीकार्य है।' जैसा कि फॉरवर्ड प्रेस में 2010 में प्रकाशित एक रपट में बताया गया था, उच्च सदन हाउस ऑफ लार्डस के दबाव में संसद ने 'इक्वालिटी एक्ट' इस वायदे के साथ पारित किया था कि भेदभाव के आधारों में जाति को शामिल करने पर गंभीरता से विचार किया जाएगा। तीन वर्ष गुजर जाने के बाद भी इस विषय में कुछ नहीं किया गया है। यह मुख्यतः इसलिए हो रहा है क्योंकि उच्च जातियों के ब्रिटिश हिन्दू, इस तथ्य से इंकार करते आ रहे हैं कि ब्रिटिश समाज में जातिगत भेदभाव है। वे उनकी संख्या के अनुपात में कहीं अधिक प्रभावशाली व धनी है और उनके दबाव में इंग्लैंड की सरकार अपना वायदा निभाने से पीछे हट रही है। यह तब जब सरकार द्वारा प्रायोजित एक स्वतंत्र अनुसंधान में ब्रिटिश समाज में जातिगत भेदभाव के प्रचलन के स्पष्ट प्रमाण पाए गए थे और जिसमें यह सिफारिश की गई थी कि इस समस्या को कानून के जरिए ही सुलझाया जा सकता है। बेरोनेस श्रीला फ्लाथर, जो स्वंय उच्च जाति की हिन्दू हैं और हाउस ऑफ लार्डस की सदस्य भी, बिना किसी लाग–लपेट के कहती हैं, 'ब्रिटेन में जातिगत भेदभाव जिंदा है और फल–फूल रहा है। ब्रिटेन में रहने वाले लगभग 2 लाख दलित, उच्च जाति के हिन्दुओं के हाथों भेदभाव का सामना कर रहे हैं और इस तथ्य से ब्रिटिश हिन्दू भली–भांति वाकिफ है।

(साभार : फॉरवर्ड प्रेस)

विशेष सूचना

रैली की तैयारी के संबंध में परिसंघ के विभिन्न प्रदेशों के नेताओं के नाम एवं संपर्क सूत्र दिए जा रहे हैं, इनसे संपर्क करके सभी कार्यकर्ता एवं समर्थक रैली से संबंधित विभिन्न तरह की जानकारियां एवं सहयोग ले सकते हैं :-

राज्य	नाम	संपर्क
यूपी	भवननाथ पासवान	09415158866
महाराष्ट्र	सिद्धार्थ भोजने	09423608879
		09545518795
हरियाणा	महासिंह भूरानिया	09416718950
पंजाब	जसबीर सिंह पाल	09417477815
दिल्ली	विनोद कुमार	09871237186
दिल्ली	डॉ. नाहर सिंह	09312255381
राजस्थान	इन्द्राज सिंह	09314564726
उत्तराखंड	हीरा लाल	09358037625
उड़ीसा	डी. के. बेहरा	09438747757
मध्यप्रदेश	परम हंस प्रसाद	09424746393
गुजरात	आर. एस. मौर्या	09428102730
तमिलनाडु	बी. सगादेवन	09443215105
तमिलनाडु	एम. पी. कुमार	09381065204
केरल	के. रमनकुट्टी	09895656799
आंध्रप्रदेश	महेश्वर राज	09440508869
छत्तीसगढ़	अनिल मेश्राम	09893008233
पश्चिम बंगाल	कमल कृष्ण मंडल	09674713168
		09831794627
झारखंड	मधुसूदन कुमार	09431187043
जम्मू व कश्मीर	आर. के. कलसोत्रा	09419182452
बिहार	मदन राम	09431805412
कर्नाटक	जे. श्रीनिवासलू	09945597437
हिमाचल प्रदेश	सीताराम बंसल	09418052661

वहां सपने का सोना नहीं, महान बौद्ध संस्कृति दबी हुई है

डॉ. एम. एल. परिहार

पिछले दिनों सम्पूर्ण भारत में साधु के सपने में आए सोने के खजाने की खूब चर्चा रही। मनुवादी मीडिया को तो ऐसे अंधविश्वासपूर्ण विषयों और दकियानुसी बातें डालकर चटपटी बनाकर लोगों को परोसने में ज्यादा ही मजा आता है। सरकारी तंत्र, मीडिया, अंधविश्वासी साधु व अधिकतर जनता की मानो मति ही मारी गई थी जो सारे काम-धंधे छोड़कर इस वैज्ञानिक युग में भी सपने का सोना लूटने चल पड़े थे। आखिर वही हुआ जो होना था पूरी दुनिया में जगहंसाई हुई। एक बार फिर हमने साबित कर दिया कि हम मेहनत, कर्म व ईमानदारी के बजाय जादू, चमत्कार, वरदान व सपनों में ज्यादा विश्वास करते हैं। खैर, उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के डोंडियाखेड़ा गांव में आर्कियोलोजिक सर्वे आफ इंडिया द्वारा साधु के कहने पर जो खुदाई की गई उसमें सोना तो नहीं मिला लेकिन सोने से भी ज्यादा महत्वपूर्ण इस देश की गौरवशाली बौद्ध संस्कृति जरूर मिल गई है। जातिवादी मीडिया रो-धोकर कवरेज तो अब नहीं कर रहा है। लेकिन यह भी नहीं बता रहा है कि खुदाई में बुद्ध की प्रतिमा व अन्य सामग्रियां मिली है तथा आगे खुदाई करने पर एक विशाल बौद्ध साम्राज्य की प्राप्ति हो सकती है।

दरअसल खुदाई वाली जगह डोंडियाखेड़ा बौद्ध शासकों के साम्राज्य के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है जहां सातवीं शताब्दी में महान चीनी यात्री हवेनसांग आया था और उसने अपने यात्रा वृतांत में डोंडियाखेड़ा का विस्तृत उल्लेख किया था। इसी ऐतिहासिक समृद्धि को बाद में भारतीय पुरातत्व के पितामह अलेक्जेंडर कनिंगम ने भी अपनी पुस्तक (सन् 1862) में सारा विवरण दिया है। इसके बाद बौद्ध अनुयायी अंबेडकरवादी विद्वान प्रो. अंगने लाल ने भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक उत्तरप्रदेश के बौद्ध केन्द्र में भी डोंडियाखेड़ा की जानकारी देते हुए यहां के बौद्ध धम्म के प्राचीन वैभव का वर्णन किया है। त्रासदी यह है कि पौराणिक देवी-देवताओं की काल्पनिक कहानियों पर सदियों से अंधविश्वास फैलाने वाला समाज व मीडिया इस स्थान की ऐतिहासिक सच्चाई को भी सामने नहीं ला रहा है। क्योंकि यह दबी हुई संस्कृति बौद्धधर्म से संबंधित है। और यह तो प्रमाणित है कि भारतीय सवर्ण समाज को बुद्ध, कबरी, फूले, रैदास के दर्शन को तो हमेशा दबाने में रहा है। हाल ही चर्चा में आया डोंडियाखेड़ा भी प्रसिद्ध बौद्ध केन्द्र है।

निर्वाण प्राप्त बौद्ध दार्शनिक प्रो. अंगनेलाल ने अपनी पुस्तक उत्तरप्रदेश के बौद्ध केन्द्र में लिखा है कि यह स्थान गंगा नदी के तट की ओर नौराही नदी के किनारे पर स्थित है। चौथी शताब्दी में चीनी यात्री हवेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत में इसका नाम आयोमुखा लिखा है। एलेक्जेण्डर कनिंघम ने इसकी पहचान डोंडियाखेड़ा नाम से की है। हवेनसांग के अनुसार, यहां पांच विशाल बौद्ध शिक्षा केन्द्र सछाराम थे जिनमें 1000 भिक्षु रहते थे। वे स्थविरवादी (थेरवादी) बौद्ध थे और उसकी सम्मतिय शाखा को मानते थे। इस समृद्ध नगर के पास ही गंगा के किनारे सम्राट अशोक द्वारा 200 फुट ऊंचा बौद्ध स्तूप बनवाया था क्योंकि यहां पर तथागत गौतम बुद्ध ने तीन महीने तक धम्म का उपदेश दिया था। इसके अलावा चार पूर्व बुद्धों के स्मारक भी हवेनसांग ने देखे थे। इसके पास ही एक दूसरा स्तूप भी या जिसमें भगवान बुद्ध के केश, नख धातु सन्निहित किये गये थे। स्तूप के पास ही एक बड़ा संघाराम (विहार) था जिसमें 200 बौद्ध भिक्षु देखे थे। इस संघाराम के बुद्धालय में गौतम बुद्ध की अत्यंत सुंदर प्रतिमा थी। यह विश्वविद्यालय साहित्य व शिक्षा के उत्कृष्ट केंद्र था। इसी संघाराम विहार में बैठकर बौद्ध आचार्य बुद्धदास ने सर्वास्तिवाद निकाय के महाविभाषा शास्त्र की रचना की थी जो एक प्रमुख धम्म ग्रंथ है।

हवेनसांग इस नगर से आगे चला तो घने जंगल में ठगों ने उसे पकड़ लिया और उसे देवी के मंदिर में बलि चढ़ाने के लिए तैयार किया लेकिन हवेनसांग किसी तरह चकमा देकर बच निकला। वह आज के मारवी गांव के पास नाव छोड़कर जमीन मार्ग से डोंडियाखेड़ा पहुंचा था। उस समय गंगा, ऊगू, अतहा और मारवी के पास ही बिताया था जहां भयानक जंगल था। हवेनसांग ने सारा लोमहर्षक व खतरे से भरा यात्रा विवरण अपने यात्रा वृतांत में लिखा है।

उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश वैज्ञानिक अलेक्जेंडर कनिंघम को भारतीय पुरातत्व विभाग का पितामह कहा जाता है जिन्होंने सैकड़ों बौद्धस्थलों की खुदाई करवाकर जमीन में दफन बौद्ध स्थलों को ढूंढ़ निकाला उनमें से एक मौजूदा चर्चित स्थान डोंडियाखेड़ा भी है। हवेनसांग की एक-एक बात का पीछा कर खोजी कनिंघम ने डोंडियाखेड़ा की पहचान की थी। उन्होंने एक विशाल टीले पर 385 वर्ग फीट के एक भवन या किले के अवशेष देखे थे जो किसी संघाराम विहार के चिन्ह हो सकते हैं। कनिंघम ने डोडिया का अर्थ नगाड़ा पीटने वाला किया है। हवेनसांग के वर्णन के अनुसार, यहां भगवान बुद्ध ने तीन माह तक करूणा, दया, शील, मैत्री व वैज्ञानिक धम्म का उपदेश दिया था जिससे प्रभावित होकर हजारों लोग बौद्ध अनुयायी बने होंगे इसे धार्मिक दुंदुभि बजाना कहा जा सकता है। कनिंघम के अनुसार, हवेनसांग ने हयमुख नगर के जिन संघारामों विहारों व स्तूपों का वर्णन किया है उसकी खोज थोड़ी दूर स्थित गुनीर और कुटीर टीलों में की जानी चाहिए। प्रो. अंगलेलाल ने अपने निर्वाण से कई वर्ष पहले भारत सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा इस दिशा में कदम उठाने के लिए लिखा था।

हवेनसांग के अनुसार, यह स्थान एक बौद्ध विश्वविद्यालय के रूप में था जिसमें भगवान बुद्ध की एक आकर्षक जीवंत सी प्रतिमा लगी हुई थी यहां दूर-दूर से विद्यार्थी बौद्ध धम्म के अध्ययन हेतु आते थे। यही पर माहविभाषा शास्त्र की रचना बौद्ध आचार्य द्वारा की गई थी। हवेनसांग के अनुसार, यह नगर 60 मिल के दायरे में फैला हुआ था। महल व केन्द्र के भवनों पर सुंदर शिल्प कला देखी गई थी। कनिंघम के अनुसार, कालांतर में डोंडियाखेड़ा बैस राजपूतों के शासन की राजधानी बना जो बाद में ओंध में बैंसवारा नाम से जाना जाने लगा। इन्हीं वंश के राजा रामबक्श सिंह के शासन के बहुत पहले बौद्ध धम्म के साम्राज्य की संस्कृति दब चुकी थी। अलेक्जेंडर कनिंघम की विस्तृत खोजी रिपोर्ट सन् 1878 में छपी थी तथा 1862 से ही बौद्ध केन्द्रों की खोज में लगे हुये थे। डोंडियाखेड़ा में स्थित मौजूदा भवन राजा अभयचंद बैस ने बनवाया था जो इस संग्रामपुर कहता था क्योंकि यहां उसने युद्ध भी लड़ा था। जिस राजा रामबक्श सिंह का इस कथित सोने की खुदाई के समय जिक्र आया था वह अभयचंद बैस के ही वंशज है तथा 1857 के युद्धों के समय फांसी पर चढ़ा दिया गया था। कुल मिलाकर यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है जो प्राचीन समय में साहित्य, शिक्षा व धम्म का एक प्रमुख बौद्ध केन्द्र था यदि इसकी और अधिक गहराई व लम्बाई में खुदाई की जाय तो सारनाथ, नालंदा, राजगीर, श्रावस्ती की तरह एक और प्रमुख बौद्ध केन्द्र सामने आ सकता है। आखिर जिज्ञासु ब्रिटिश पुरातत्व वैज्ञानिकों की बौद्ध धम्म में रूचि के कारण ही 150 साल पहले ही सारे प्रमुख बौद्ध स्थल खुदाई के बाद सामने आये है वरना सन् 1200 से 1800 तक बौद्ध धम्म सा सारा वैभव जमीन में दबा पड़ा था। 600 वर्ष तक किसी को पता नहीं था कि बुद्ध का जन्म यहां हुआ था। गया, लुम्बिनी, सारनाथ, वैशाली का कहीं नामोनिशान नहीं था। यदि सम्राट अशोक ने जगह-जगह शिलालेख, स्तूप आदि नहीं बनवाये होते तो आज कुछ भी पता नहीं चल पाता और ब्रिटिश पुरातत्व वैज्ञानिकों ने ब्रिटिश काल में नया पुरातत्व विभाग गठित कर बड़े पैमाने पर देश में खुदाई नहीं करवाई होती तो सारा गौरव आज तक दफन ही रह जाता।

लुंबिनी में मिला दुनिया का सबसे प्राचीन बौद्ध विहार

बुद्ध की जन्मस्थली पर खुदाई कर रहे पुरातत्वविदों ने अब तक ज्ञात सबसे पुराने बौद्ध धर्मस्थल की खोज की है। नेपाल के लुंबिनी में स्थित माया देवी मंदिर में खुदाई के दौरान मिली शहतीर ईसा से 600 वर्ष पूर्व है।

ऐसा लगता है कि बौद्ध विहार में एक पेड़ था। यह खोज उस किवंदति की पुष्टि करती है जिसमें कहा जाता है कि बुद्ध के जन्म के समय मां ने पेड़ की एक शाखा को पकड़ रखा था। पुरातत्वविदों की टीम द्वारा जर्नल एंटीक्विटी को दी गई सूचना में कहा गया है कि यह खोज बुद्ध के जन्म की तारीख के बारे में विवाद का पटाक्षेप कर सकती है।

हर वर्ष हजारों की संख्या में बौद्ध श्रद्धालु लुंबिनी की धार्मिक यात्रा पर जाते हैं। बहुत पहले से माना जाता है कि यह सिद्धार्थ गौतम की जन्म स्थली रही है।

जीवन और शिक्षा

धार्मिक स्थल को खुदाई के दौरान भी प्रार्थना के लिए खुला रखा गया। बुद्ध के जीवन और उनकी शिक्षाओं पर बहुत कुछ लिखे जाने के बावजूद अभी तक उनके जीवन काल के बारे में बहुत स्पष्ट नहीं है। जो अनुमान लगाए गए हैं उसमें बुद्ध के काल को 630 वर्ष ईसा पूर्व तक माना गया है लेकिन, बहुत से विद्वान 390 से 340 वर्ष ईसा पूर्व के समय काल को ज्यादा सही मानते हैं।

लुंबिनी में अभी तक की बौद्ध संरचनाएं 300 वर्ष ईसा पूर्व से पुरानी नहीं हैं, जो सम्राट अशोक का युग माना जाता है। मामले की तह तक जाने के लिए पुरातत्वविदों ने मंदिर के अंदर खुदाई शुरू की। खुदाई के दौरान बिना छत वाला लकड़ी का एक स्थान मिला. शहतीरों के ऊपर बाद में ईंट का मंदिर बना था। आज की तारीख में इस इमारत के अवशेषों- लकड़ी, चारकोल, बालू के दाने की कार्बन डेटिंग व अन्य अत्याधुनिक तकनीक से उनकी उम्र का बता लगाया गया है।

नेशनल जियोग्राफिक सोसाइटी से सहयोग प्राप्त एक अंतरराष्ट्रीय टीम का नेतृत्व करने वाले डरहम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रोबिन कोनिंघम ने कहा, 'पहली बार हमने लुंबिनी में पुरातात्विक कड़ियों को जोड़ने में सफलता हासिल की है।'

''हमें पता चला है कि यह इमारत 600 वर्ष ईसा पूर्व की है। यह दुनिया में ज्ञात सबसे पुरातन बौद्ध धर्मस्थल है।'' 600 वर्ष ईसा पूर्व पुरातत्वविदों को उम्मीद है कि इस खोज से स्थल के संरक्षण में मदद मिलेगी। बौद्ध परम्परा और शिक्षा में अंतर को लेकर लंबे समय से चली आ रही बहस पर यह प्रकाश डालता है।

साक्ष्य बताते हैं कि अशोक के संरक्षण में बने इस धर्मस्थल के रूप में मौजूद लुंबिनी की संरचना में अवश्य सुधार हुआ होगा। स्पष्ट है कि यह स्थल सदियों पहले नीचे चला गया था। खुदाई में खुली संरचना के मध्य एक पेड़ की जड़ें मिली हैं। इससे संकेत मिलता है कि यह पेड़ के नीचे उपदेश वाला स्थल रहा होगा।

परम्पराओं के मुताबिक ये माना जाता है कि बुद्ध को जन्म देते समय रानी माया देवी ने पेड़ की शाखा को पकड़ रखा था। इस खोज से यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज में शामिल बौद्ध जन्म स्थल को संरक्षित करने में मदद मिलेगी। नेपाल के पर्यटन मंत्री राम कुमार श्रेष्ठ ने कहा, ''यह खोज बुद्ध के जन्म स्थली के बारे में बेहतर समझ बनाने में मददगार साबित होगी।''

(साभार : बीबीसी हिन्दी)

आगामी रैली से संबंधित हैंडबिल का नमूना छापा जा रहा है। परिसंघ के नेताओं से अपील है कि अपनी ओर से भी छपवाकर वितरित करें व तैयारी जोर से करें

परिसंघ के आह्वान पर निजी क्षेत्र में आरक्षण एवं आर्थिक सत्ता में भागीदारी के लिए रैली

डॉ० उदित राज
राष्ट्रीय चेयरमैन

16 दिसंबर, 2013 (सोमवार) को प्रात: 11 बजे लाखों की संख्या में जंतर-मंतर, नई दिल्ली पर एकत्र होकर संसद का घेराव करें

साथियो,

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ की स्थापना 1997 में हुई। यह तब हुई थी जब पांच आरक्षण विरोधी आदेश भारत सरकार ने जारी किए। इसके महान संघर्ष की वजह से 81वां, 82वां एवं 85वां संवैधानिक संशोधन हुए तब जाकर आरक्षण बचा। इस संघर्ष की 11 दिसंबर 2000 की रैली इतनी बड़ी थी कि आजाद भारत की 10 बड़ी रैलियों में से एक मानी गई थी जिसके प्रभाव से आरक्षण बचा (हिंदुस्तान समाचार की रिपोर्ट)। 4 नवंबर 2001 को लाखों लोग बौद्ध बने। निजी क्षेत्र में आरक्षण के महत्व को जब लोग समझ भी नहीं पाते थे तब से परिसंघ इसकी मांग उठाता रहा है और अब यह राष्ट्रीय मुद्दा बन गया है। 2006 में जब पिछड़ों को उच्च शिक्षण संस्थानों में आरक्षण मिला तो परिसंघ ही संघर्ष करके विरोध को दबाया और आरक्षण लागू कराया। अन्ना हजारे ने जब हठ किया कि लोकपाल बने और वह संविधान से भी ऊपर हो तो हमने ही उसका जवाब दिया। बहुजन लोकपाल बिल पेश किया और इसी से संसद में जब लोकपाल पर बहस हुई तो आरक्षण का प्रावधान रखा गया। कुल मिलाकर 1997 से लेकर अब तक परिसंघ ही एकमात्र संगठन रहा जिसने नतीजा देने वाली लड़ाई लड़ी। शेष अधिकतर संगठन चंदाखोरी, सभा–सम्मेलन और कैडर करने में ही लगे रहे।

निजी क्षेत्र में आरक्षण जिंदगी और मौत का प्रश्न बन गया है। यूपीए प्रथम के समय में सरकार कुछ गंभीर थी लेकिन जब हम थोड़ा अपने ही लोगों के द्वारा टांग खिंचाई से कमजोर हुए तो सरकार के ऊपर दबाव कम हुआ और अभी तक निजी क्षेत्र में नौकरी देने के लिए कानून नहीं बना। हमारे कमजोर होने से पदोन्नति में आरक्षण उत्तर प्रदेश में छिना क्यूंकि वहां के कर्मचारियों ने 4 जनवरी 2011 के बाद से भी हमारा साथ नहीं दिया। इसी दिन लखनऊ हाईकोर्ट ने पदोन्नति में आरक्षण समाप्त करने का फैसला दिया था। फैसले के अंतिम पैराग्राफ में उल्लेख भी था कि राज्य सरकार चाहे तो 2006 में सुप्रीम कोर्ट के द्वारा दिए गए एम. नागराज के फैसले में शर्तों को पूरा करते हुए आगे इस अधिकार को यथास्थिति रख सकती है। उसने ऐसा न करके सुप्रीम कोर्ट में अपील किया और 27 अप्रैल 2012 को फिर से उल्टा फैसला आ गया। नागराज की तीन शर्तें– पिछड़ापन, प्रतिनिधित्व और दक्षता गलत हैं क्योंकि 77वें, 81वें, 82वें एवं 85वें संवैधानिक संशोधनों में ऐसा नहीं है। आरक्षण कानून बनाने के लिए 2004 से बिल लंबित है और अभी तक यह संसद से पास नहीं हो सका है।

निजीकरण एवं भूमंडलीकरण की वजह से जिसके पास धन है उसी की मीडिया, सत्ता और तमाम ताकतें है। जिस दौर से हम गुजर रहे हैं उसमें विचारधारा की लड़ाई नहीं रह गई है। ऐसे में यदि दलित आदिवासी को आर्थिक सत्ता में भागीदारी के लिए प्रशिक्षण, कैडरकैम्प, तकनीकी सहायता, कर्ज, बाजार, नेटवर्क, मांग एवं पूर्ति आदि के लिए इन्हें तैयार नहीं किया गया तो ये गुलाम ही रह जाएंगे।

उपरोक्त समस्याओं के अतिरिक्त सफाई कर्मियों का बेतहाशा शोषण और इस कार्य में ठेकेदारी प्रथा है। उच्च न्यायपालिका एवं सेना में आरक्षण आदि बड़ी समस्याएं हैं। जाति–प्रमाणपत्र जारी होने में परेशानी और एक राज्य का दूसरे राज्य में न मान्य होना, नौकरी में भारी नुकसान है। हमारे सामने दलित एकता की बड़ी चुनौती है। जब तक हम बाबा साहेब एवं अपने पूर्वजों की विचारधारा को दलित समाज की समस्त जातियों में जो कम अंबेडकरवादी हैं जैसे बाल्मिकी, खटिक, मादिगा, पासी, धानुक, धोबी, कोली आदि में नहीं फैलाते हैं, तब तक हमारी संख्या और एकता कम रहेगी और उपरोक्त अधिकारों को हासिल करना मुश्किल होगा। परिसंघ आह्वान करता है कि अब आप गैर–अंबेडकरवादियों के बीच जाकर अपनी ताकत को बढ़ाएं। हमारी लड़ाई व्यवस्था परिवर्तन की है और प्रत्येक क्षेत्र में भागीदारी चाहते हैं।

उपरोक्त मांगों को लेकर 16 दिसंबर 2013 को प्रातः 11 बजे नई दिल्ली स्थित जंतर–मंतर पर लाखों की रैली के उपरांत प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपा जाएगा।

निवेदक : इंदिरा आठवले, प्रधान महासचिव

भवननाथ पासवान, डॉ0 अनिल कुमार, एस. पी. सिंह (उ0प्र0), एस.यू. गडपायले, सिद्धार्थ भोजने, प्रकाश पाटिल (महाराष्ट्र), महासिंह भूरानिया, एस. पी. जरावता, फूल सिंह गौतम (हरियाणा), जसबीर सिंह पाल, दर्शन सिंह चंदेढ़ (पंजाब), विनोद कुमार (मो.– 9871237186), डॉ. नाहर सिंह, एन. डी. राम, ललित कुमार, आर. सी. मथुरिया, ब्रह्म प्रकाश, ए. आर. कोली, पी. आर. मीणा (दिल्ली), इन्द्राज सिंह, विश्राम मीना (राजस्थान), आर.वी. सिंह, हीरा लाल, एच.सी. आर्या, रोहित कुमार, जयपाल सिंह (उत्तराखंड), डी.के. बेहरा, डॉ. के. सी.मल्लिक, शंखानंद, नारायन चरन दास (उड़ीसा), परम हंस प्रसाद, आर.बी. सिंह (म.प्र.), आर. एस. मौर्या, दीपक पटेल (गुजरात), जी. रंगनाथन, बी. सगादेवन, एम. पी. कुमार (तमिलनाडु), के. रमनकुट्टी (केरल), मधु चन्द्रा (मणिपुर), महेश्वर राज, जी. शंकर, प्रेम कुमार, आई मैसया, एस. रामकृष्णा, जे. बी. राजू, वाई. एम. विजय कुमार, बी. नरसिंह राव, पी. वी. रमणा (आन्ध्र प्रदेश), अनिल मेश्राम, हर्ष मेश्राम (छत्तीसगढ़), कमल कृष्ण मंडल, रामेश्वर राम, सपन हलदर (प.बंगाल), मधुसूदन कुमार, विनय मुंडू (झारखण्ड), आर.के. कलसोत्रा (जम्मू व कश्मीर), मदन राम, कुमार धीरेंद्र (बिहार), जे. श्रीनिवासलू, जी. वेंकटस्वामी, पुरुषोत्तम दास, गोपाल प्रसाद (कर्नाटक), सीताराम बंसल (हि.प्र.)

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ

पत्राचार : टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-1, फोन : 23354841-42, टेलीफैक्स : 23354843 Email : dr.uditraj@gmail.com

जय भीम ! जय भारत !!

अनुसूचित जाति / जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय

परिसंघ

के आवाहन पर

डॉ० उदित राज
राष्ट्रीय चेयरमैन

निजी क्षेत्र एवं पदोन्नति में आरक्षण एवं आरक्षण कानून के लिए

16 दिसंबर, 2013 (सोमवार) को प्रात: 11 बजे जंतर मंतर, नई दिल्ली पर

महारैली एवं संसद का घेराव

निवेदक : इंदिरा आठवले, प्रधान महासचिव

भवननाथ पासवान, डॉ० अनिल कुमार, एस. पी. सिंह (उ०प्र०), एस.यू. गडपायले, सिद्धार्थ भोजने, प्रकाश पाटिल (महाराष्ट्र), महासिंह भूरानिया, एस. पी. जरावता, फूल सिंह गौतम (हरियाणा), जसबीर सिंह पाल, दर्शन सिंह चंदेढ़ (पंजाब), विनोद कुमार (मो. 9871237186), डॉ. नाहर सिंह, एन. डी. राम, ललित कुमार, आर.सी.मथुरिया, ब्रह्म प्रकाश, ए.आर. कोली, पी.आर. मीणा (दिल्ली), इन्द्राज सिंह, विश्राम मीना (राजस्थान), आर.वी. सिंह, हीरा लाल, एच.सी. आर्या, रोहित कुमार, जयपाल सिंह (उत्तराखंड), डी.के. बेहरा, डॉ. के. सी.मल्लिक, शंखानंद, नारायन चरन दास (उड़ीसा), परम हंस प्रसाद, आर.बी. सिंह (म.प्र.), आर.एस. मौर्या, दीपक पटेल (गुजरात), जी. रंगनाथन, बी. सगादेवन, एम.पी. कुमार (तमिलनाडु), के.रमनकुट्टी (केरल), मधु चन्द्रा (मणिपुर), महेश्वर राज, जी.शंकर, प्रेम कुमार, आई मैसया, एस. रामकृष्णा, जे.बी. राजू, वाई.एम. विजय कुमार, बी. नरसिंह राव, पी.वी. रमणा (आन्ध्र प्रदेश), अनिल मेश्राम, हर्ष मेश्राम (छत्तीसगढ़), कमल कृष्ण मंडल, रामेश्वर राम, सपन हलदर (प.बंगाल), मधुसूदन कुमार, विनय मुंडू (झारखण्ड), आर.के. कलसोत्रा (जम्मू व कश्मीर), मदन राम, कुमार धीरेंद्र (बिहार), जे. श्रीनिवासलू, जी. वेंकटस्वामी, पुरूषोत्तम दास, गोपाल प्रसाद (कर्नाटक), सीताराम बंसल (हि.प्र.)

पत्राचार : टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-1,
फोन : 23354841-42, टेलीफैक्स : 23354843 Email : dr.uditraj@gmail.com

ओमप्रकाश वाल्मीकि नहीं रहे

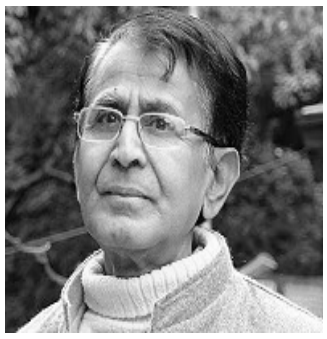

हिन्दी पट्टी में दलित साहित्य के दिशा प्रवर्तक ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का निधन 17 नवंबर को देहरादून के एक अस्पताल में हो गया। उनका जन्म 30 जून 1950 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरपुर जिले के बरला गांव में हुआ था। अभी वे मात्र 63 वर्ष के हुए थे। हिन्दी पट्टी में दलित साहित्य को अपनी रचनाओं के जरिये स्थापित करने का काम वाल्मीकि जी ने किया था। उनकी आत्मकथा जूठन ने दलित साहित्य को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया। वाल्मीकि जी अपने समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति सजग रहने वाले लेखक थे। उनकी कहानी शवयात्रा इसका प्रतीक है। इसका काफी विरोध किया गया लेकिन वाल्मीकि जी अपने विचारों पर दृढ़ रहे। आलोचनाओं की परवाह नहीं की।

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिन्दी के जाने-माने दलित साहित्यकार थे। दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र, मुख्यधारा और दलित साहित्य, सफाई देवता जैसी उनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

साहित्य में अप्रतिम योगदान के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से भी नवाजा गया था। वे देहरादून स्थित आर्डिनेंस फैक्ट्री में एक अधिकारी के रूप में काम करते हुए अपने पद से सेवानिवृत्त हो गए थे और उसके बाद से देहरादून में ही रह रहे थे।

दलित मेडिकल छात्रा ने तोड़ा सौ साल का रिकार्ड

अमरेंद्र यादव

लखनऊ : डॉक्टर बनने के अपने सपने को सरकार करने के लिए उसने जी-तोड़ मेहनत की। दलित परिवार की एक ऐसी लड़की, जिसने मेडिकल की पढ़ाई में 18 मेडल जीते और लखनऊ मेडिकल कॉलेज का सौ साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया, रात-दिन पढ़ाई और मरीजों के सेवाभाव ने उसे उस मुकाम पर पहुंचा दिया जहां उसने यूनिवर्सिटी के सर्वोच्च मेडल पर कब्जा कर लिया। हम बातें कर रहे हैं उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के इंडासो गांव की दलित परिवार के पिता हरिश्चंद्र ओर माता आशा देवी के घर जन्मी और सत्र 2008-2013 में किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) में टॉप करने वाली डॉ. वंदना गौतम की। अपनी मेहनत के बलबूते पर एमबीबीएस में टॉप करने के साथ केजीएमयू के 18 मेडलों पर कब्जा करने वाली डॉ. वंदना को 29 सितंबर को आयोजित दीक्षांत समारोह में सर्वश्रेष्ठ 'हीवेट गोल्ड मेडल' से प्रदेश के राज्यपाल बीएल जोशी और मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने सम्मानित किया। उन्हें यह मेडल फाइनल प्रोफेशनल एमबीबीएस पार्ट-टू परीक्षा में सबसे ज्यादा अंक हासिल करने के लिए दिया गया। दूसरे सर्वश्रेष्ठ 'चांसलर मेडल' पर भी वंदना का कब्जा है। ये मेडल एमबीबीएस के सभी परीक्षाओं में कुल मिलाकर सर्वोच्च अंक पाने के लिए दिया गया। तीसरा 'यूनिवर्सिटी ऑनर्स मेडल' सबसे ज्यादा ऑनर्स और प्रशस्ति पत्र हासिल करने और सभी परीक्षाओं को पहले प्रयास में पास करने के लिए दिया गया। डॉ. वंदना के पूर्व, लखनऊ मेडिकल कॉलेज के सौ वर्ष के इतिहास में अनुसूचित जाति की किसी छात्रा ने दोनों सर्वोच्च मेडल एक साथ हसिल नहीं किए थे।

(साभार : फॉरवर्ड प्रेस)

बीएचयू कुलपति पर गिरी अनुसूचित जाति आयोग की गाज

अमरेंद्र यादव

बनारस : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. इंदु चौधरी के दलित उत्पीड़न से जुड़े मामले में बीएचयू के कुलपति डॉ. लालजी सिंह पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत कार्यवाही हो सकती है। इससे संबंधित एक रिपोर्ट राष्ट्रीय अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष पीएल पुनिया ने राष्ट्रपति को सौंपी है। रिपोर्ट में कुलपति के खिलाफ अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति अधिनियम के तहत कानूनी कार्यवाही करने की सिफारिश की गई है। ज्ञात हो कि बीएचयू के अंग्रेजी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. इन्दु चौधरी को आवास आवंटन में देरी और विश्वविद्यालय के अतिथिगृह में रहने की अवधि का भारी-भरकम किराया वसूलने को लेकर उत्पीड़ित करने की शिकायत पर आयोग ने उनका पक्ष जानने के लिए कुलपति को तलब किया था। कई बार आदेश जारी करने के बाद भी कुलपति आयोग के समक्ष उपस्थित नहीं हुए। तब आयोग ने समन जारी किया। फिर वारंट जारी किया। कुलपति डॉ. लालजी सिंह ने न्यायालय में वारंट की वैधता को चुनौती दी। इस पर उन्हें स्थगन आदेश मिल गया। विवि का कहना है कि आयोग के निर्देश का पूरा सम्मान किया गया और उचित दस्तावेज प्रस्तुत किए गए। उत्पीड़न की शिकार इंदू चौधरी ने आरोप लगाया कि बीएचयू प्रशासन अब भी पक्षपातपूर्ण कार्रवाई कर रहा है। उन्होंने इसकी शिकायत अनुसूचित जाति/जनजाति आयोग से की है।

(साभार : फॉरवर्ड प्रेस)

BHU VC faces ire of SC/ST Commission

Amarendra Yadav

Varanasi : Dr. Lalji Singh, the vice chancellor of Banaras Hindu University (BHU) may face prosection under SC/ST (Prevention of Atrocities) Act, 1989, in the case of Dr. Indu Chaudhary, Professor in the English department of the varsity. Dr. PL Punia, the chairperson of the National Commission of Scheduled Castes and Tribes has submitted a report to the President of India, recommending legal action against the VC under the Prevention of Atrocities Act. The commission had summoned the VC to appear before it and present his side on a complaint lodged by Dr. Chaudhary. After several orders yielded no result, the commission issued summons and subsequently, a warrant. The VC challenged the legality of the warrant in a court of law and obtained a stay order. The university says that it extended due courtesy and respect to the commission and all relevant documentsw were presented before it. Dr. Indu Chaudhary alleged that the varsity administration was still following discriminatory policies and that she had complained to the commission regarding them.

(Courtesy : Forward Press)

Special Infromation

Names and Contact nos. of prominent Confederation leaders of each State are given below for any query or information about the 16th December Rally :

State	Name	Contact
U.P.	Bhawannath Paswan	09415158866
Maharashtra	Siddharth Bhojne	09423608879
		09545518795
Haryana	Maha Singh Bhurania	09416718950
Punjab	Jasbir Singh Pal	09417477815
Delhi	Vinod Kumar	09871237186
Delhi	Dr. Nahar Singh	09312255381
Rajasthan	Indraj Singh	09314564726
Uttarakhand	Hira Lal	09358037625
Orissa	D. K. Behera	09438747757
Madhya Pradesh	Param Hans Prasad	09424746393
Gujarat	R. S. Maurya	09428102730
Tamilnadu	B. Sagadevan	09443215105
Tamilnadu	M. P. Kumar	09381065204
Keral	K. Ramankutty	09895656799
Andhra Pradesh	Maheswar Raj	09440508869
Chhatisgarh	Anil Meshram	09893008233
West Bengal	Kamal Krishna Mandal	09674713168
		09831794627
Jharkhand	Madhusudan Kumar	09431187043
Jammu & Kashmir	R. K. Kalsotra	09419182452
Bihar	Madan Ram	09431805412
Karnatak	J. Shriniwaslu	09945597437
Himachal Pradesh	Seetaram Bansal	09418052661

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22**,** Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:

Five years : Rs. 600/-

One year : Rs. 150/-

Samples of the Handbill for the forthcomming Rally are being published. It is an earnest appeal to the Confederation Leaders that they should get these printed and distributed

Confederation Call For A Rally For Reservation In Pvt. Sector And Economic Empowerment

Dr. Udit Raj
National Chairman

On 16th December, 2013 (Monday) at 11 AM, Lakhs of People to Assemble at Jantar-Mantar, New Delhi, And Then to Gherao Parliament

Friends,

The All India Confederation of SC/ST Organizations was established in 1997 to withdraw 5 anti-reservation orders issued by the DOPT. Our struggle was so vibrant that one of the rallies held on 11th December, 2000, is reckoned as the biggest rally after Independence. Another feather in the cap of our struggle was mobilization of lakhs of Dalits for conversion to Buddhism on November 4, 2001. When people hardly understood the implication of privatization, the Confederation raised the issue of private sector reservation. In 2006, reservation was given in higher education for OBCs although opposition was so huge and we immediately countered and as a result, it was successfully implemented. When Anna Hazare went on a fast in 2011 and the countrywide mood swung in his favour to bring about Lok Pal Bill, even at the cost of sovereignty of the Constitution, the Confederation not only replied with matching demonstration but also presented their version of Bahujan Lok Pal Bill. When the Parliament took up this issue for debate, reservation for SC/ST/OBC and minorities in the Lok Pal Bill was considered as envisaged in the Bahujan Lok Pal Bill. Since 1997, the Confederation is the only organization in the country which has struggled and brought forth positive results whereas others have engaged themselves mostly in raising funds, holding seminars, public meetings and conducting cadre camps which are merely a theroretical exercise.

Reservation in private sector is a question of life and death. The UPA I was a little bit serious about it but is now dithering from its stand in UPA II. It is due to our weak support base. Our strength dwindled due to leg-pulling and selfish nature of employees. The Lucknow High Court gave a judgement on 4.1.2011 withdrawing reservation in promotions. We tried to muster the support of the U.P. employees but they refused to come forward and as a result, demand for reservation in promotions could not be fought. In the last paragraph of the judgement, the High Court held that if the State Government wants to continue reservation in promotions, it can do so by complying with the conditions of the M. Nagaraj judgement. In 2006, the Supreme Court gave a judgement in the case of M. Nagaraj, laying down the conditions of backwardness, adequate representation and efficiency. It is to be noted that the 77th, 81st, 82nd and 85th constituitional amendmentls never mentioned such conditions. Unfortunately, the U.P. Government preferred to file a suit in the Supreme Court and the Supreme Court, as it was expected, endorsed the Lucknow High Court verdict on 27.4.2012. The 117th Constitutional amendment which provides reservation in promotion, was passed in Rajya Sabha in last winter session in Parliament and it is yet to be passed by Lok Sabha. All these demands can be met provided our struggle gains the strength.

A Bill to make the Reservation Act is pending in the Parliament since 2004 and till date, it has not been passed. Due to privatization and globalization, social scenario has changed and those who have wealth and black money, control the media and political power. The ideological battle is coming to an end. In such a situation, if SC/ST and OBC people are aloof from economic empowerment, they will be relegated to further backwardness and slavery. For participation in economic empowerment, a strong movement like a political movement has to be launched like training, cadre camp, technological know-how, loans and subsidies facilities, net-working, demand and supply.

Despite the above problems, the exploitation of scavengers is quite acute and it is more due to contract system. There is no reservation in higher judiciary and Army. Geting caste certificate is a big problem and caste certificate of one State is not valid in another State thus depriving job opportunities. Currently we are facing the biggest challenge of Dalit unity and for this, we need to adhere to the ideology of Dr. Ambedkar and other social reformers. Those who are Ambedkarites, are duty bound to mobilize the less Ambedkerite castes like Balmiki, Khatik, Madiga, Passi, Dhanuk, Dhobi and Koli etc. This will not only increase our number but also strengthen us.

Kindly assemble in lakhs at Jantar-Mantar, New Delhi on 16th December, 2013 at 11 AM and thereafter to gherao the Parliament.

By

.

Bhawan Nath Paswan, Dr. Anil Kumar, S.P Singh (UP), Indira Athawale, Siddharth Bhojne, S.U. Gadpyle, Prakash Patil (M.S.), Maha Singh Bhurania, S.P. Jaravta, Phool Singh Gautam (Haryana), Jasbir Singh Pal, Darshan Singh Chanded (Punjab), Vinod Kumar (M.- 9871237186), Dr. Nahar Singh, N. D. Ram, Lalit Kumar, R. C. Mathuria, Brahm Prakash, A. R. Koli, P. R. Meena (Delhi), Indraj Singh, Vishram Meena (Rajasthan), R.V. Singh, Hira Lal, H.C. Arya, Rohit Kumar, Jaipal Singh (U.K.), D.K. Behera, Dr. K. C. Mallick, Shankhanand, Narayan Charan Das (Orissa), Param Hans Prasad, R.B. Singh (M.P.), R.S. Maurya, Deepak Patel (Gujarat), G. Rangnathan, B. Sagadevan, M. P. Kumar (T.N.), K. Raman Kutty (Kerala), Madhu Chandra (Manipur), Maheshwar Raj, G. Shankar, Prem Kumar, I Mysaiah, J. B. Raju, S. Ramkrishna, Y.M. Vijay Kumar, B. Narsingh Rao, P. V. Ramna (A.P.), Anil Meshram, Harsh Meshram (Chattisgarh), Kamal Krishna Mandal, Rameshwar Ram, Sapan Haldar (W. Bengal), Madhusudan Kumar, Vinay Mundu (Jharkhand), R.K. Kalsotra (J&K), Madan Ram, Kumar Dhirendra (Bihar), J. Shriniwaslu, G. Venkatswamy, Purushottam Das, Gopal Prasad (Karnataka), Seetaram Bansal (H.P.).

All India Confederation of SC/ST Organisations

Corres.: T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-1, Tel : 23354841-42, Telefax: 23354843, Email : dr.uditraj@gmail.com

Jai Bheem !

Jai Bharat !!

All India Confederation of SC/ST Organisations

Dr. Udit Raj
National Chairman

Call

For Reservation in Private Sector & Promotion and making of Reservation Act

MAHARALLY & Parliament Gherao

at

Jantar Mantar, New Delhi on 16th Dec., 2013 (Monday) at 11 AM

By

Bhawan Nath Paswan, Dr. Anil Kumar, S.P Singh (UP), Indira Athawale, Siddharth Bhojne, S.U. Gadpyle, Prakash Patil (M.S.), Maha Singh Bhurania, S.P. Jaravta, Phool Singh Gautam (Haryana), Jasbir Singh Pal, Darshan Singh Chanded (Punjab), Vinod Kumar (M.- 9871237186), Dr. Nahar Singh, N. D. Ram, Lalit Kumar, R. C. Mathuria, Brahm Prakash, A. R. Koli, P. R. Meena (Delhi), Indraj Singh, Vishram Meena (Rajasthan), R.V. Singh, Hira Lal, H.C. Arya, Rohit Kumar, Jaipal Singh (U.K.), D.K. Behera, Dr. K. C. Mallick, Shankhanand, Narayan Charan Das (Orissa), Param Hans Prasad, R.B. Singh (M.P.), R.S. Maurya, Deepak Patel (Gujarat), G. Rangnathan, B. Sagadevan, M. P. Kumar (T.N.), K. Raman Kutty (Kerala), Madhu Chandra (Manipur), Maheshwar Raj, G. Shankar, Prem Kumar, I Mysaiah, J. B. Raju, S. Ramkrishna, Y.M. Vijay Kumar, B. Narsingh Rao, P. V. Ramna (A.P.), Anil Meshram, Harsh Meshram (Chattisgarh), Kamal Krishna Mandal, Rameshwar Ram, Sapan Haldar (W. Bengal), Madhusudan Kumar, Vinay Mundu (Jharkhand), R.K. Kalsotra (J&K), Madan Ram, Kumar Dhirendra (Bihar), J. Shriniwaslu, G. Venkatswamy, Purushottam Das, Gopal Prasad (Karnataka), Seetaram Bansal (H.P.).

Corres.: T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-1,
Tel : 23354841-42, Email : dr.uditraj@gmail.com

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 16 ● Issue 25 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● 16 to 30 November, 2013

Do we have an existence ?

Dr. Udit Raj

Our community is so ignorant that they are not even able to realize the fact that they have also an existence. Who is there to make Dalit-Adivasi community aware of their existence except SC/ST employees, politicians and intellectuals. In any other society, such a situation would have led to a revolt. The elections are taking place in Delhi, Rajasthan, Madhya Pradesh and Chhatisgarh, none of the political parties has sought votes on the basis of our problems or demands. No political party has raised the issue of reservation in private sector during the elections. The Reservation Bill is pending in the Parliament since 2004 and has not been passed so far. The matter regarding reservation in promotions is also hanging fire in the Parliament. The contract system in the Safai work has become a rule rather than an exception.

On the television, mostly the issues of communalism and secularism are raised. Other news items are sensational in nature. Television network does not project our views. We have never given thought to the fact as to why no importance is given to our problems on the TV and in the newspapers. Have we ever bothered to know the nature and content of the news and views that we see on the TV or read in the newspapers? Do they discuss our issues? Are those news items correct? How many people have ever thought of boycotting the Media. How many of us have ever thought of setting up an alternative media i.e. social media? It is not only the Manuvadis who are responsible for this state of affairs of the community but our own procrastination and negligence. A famous poet had said that a field which could not provide bread to the farmers must be destroyed. Maybe this couplet leaves a great impression on the minds of people from other communities, but it hardly creates an impact on Dalits and Adivasis otherwise they would have risen in revolt for their existence. History does not frequently repeat itself for affording you an opportunity to ask for your rights. The way things are going, not much time is left if we allow things to drift. 16th December Rally is taking place at Jantar Mantar, New Delhi which should be taken as an occasion for seeking our rights and self-respect and we should do our best to make it a grand success.

Dalit medical student breaks century-old record

Amrendra Yadav

Lucknow : A Dalit medical student worked so hard to fulfil her dream of becoming a doctor that she won 18 medals and broke a century-old record of the Lucknow Medical College. Her empathy with the patients and her dedication helped her perform superlatively in her studies. Dr. Vandana Gautam, born to father Harishchandra and mother Asha Devi in a Dalit family of Indaso village of Balia district of Uttar Pradesh, has topped the MBBS examination of King George's Medocal University (KGMU) in the 2008-13 batch, winning 18 medals in all. The Hewett gold medal was awarded to her for obtaining the highest marks in the Final Professional MBBS Part II examination at the convocation function on 29 September by Governor BL Joshi and Chief Minister Akhilesh Yadav, The Chancellor Medal for obtaining highest aggregate marks in MBBS also went to her and so did the University Honours Medal for passing all exams in first attempt, obtaining the highest number of honours and commendation certificates. Vandana is the first SC student in the prestigious institution's 100-yr history to have won both the top honours.

(Courtesy : Forward Press)

UK yet to ban caste discrimination

London : On Thursday 17 October, UK-based Dalit groups protested at Hyde Park, calling upon the Government to act immediately to ensure that caste discrimination is criminalised under the Equality Act. In a statement, they said, "It is unacceptable that in modern Britain, one section of the community should discriminate against another based on outdated ancient customs and traditions". As reported by FP, in 2010, under repeated pressure from the House of Lords, Parliament passed the Equality Act into law with the promise to seriously consider inclusion of caste as grounds for discrimination. Three years have passed and the Government has yet to deliver. This is largely because upper-caste British Hindus continue in denial of caste discrimination in British society and have so far successfully exerted their disproportionate influence and wealth to stay the UK government from keeping its promise. This flies in the face of government commissioned independent research that found clear evidence of caste discrimination, and recommended legislation as the most effective way to address the problem. Baroness Shreela Flather, herself a high-caste Hindu member of the House of Lords, has blunty said, "Caste discrimination is alive and well in Britain." Britain's estimated 200,000 Dalits who continue to suffer caste discrimination at the hands of high-caste British Hindus Know this too well.

(Courtesy : Forward Press)

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com Computer typesetting by N. K. Karn